## अध्याय - ५

# श्यौराज सिंह 'बेचैन' के साहित्य में नारी चेतना

**प्रस्तावना:-**

नारी प्रकृति रूपा मानी गई है, प्रकृति परमपुरुष की इच्छा का एक प्रतिफलन है। सर्व विदित है कि जगन्नियता को जब एकांकी रमने में कुछ ऊब सी महसूस सी हुई तो वे स्वयं इच्छाशक्ति से एक से दो हो गए- तथा उस तरह से प्रकृति की सुरुचिपूर्ण रमण सृष्टि पुरुष की पूरक है एवं उसे आदिकाल से ही समस्त सृष्टि की संचालिका शक्तिरूपा माना जाता है। नारी के बिना जीवन की कल्पना बिल्कुल भी नहीं की जा सकती। केवल नारी के संयोग से ही संसार निरंतर आगे बढ़ता है।

नारी हमेशा से ही पुरुष की प्रेरणा बनी रही है। नारी का शारीरिक सौन्दर्य अगर पुरुष को लुभाता है, एवं उसकी शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति करता है तो नारी का आत्मिक सौन्दर्य पुरुष के कार्यों की सफलता की प्रेरणा भी बनता है। नारी पुरुष को निराशा के क्षणों में एक आशा देती है, दुःख में दिलासा भी देती है और उसके कर्म में उत्साह निरंतर भरती रहती है। एक परिवार में नारी का अपना एक विशेष स्थान माना जाता है। हर परिवार में नारी की आवश्यकता प्रत्येक स्थान पर होती है तथा सभी पूजा पाठ के कार्यक्रम में स्त्री का अपना विशेष स्थान है।

**'चेतना' का अर्थ :-**

चेतना मन की एक स्थिति होती है - जिसके अन्तर्गत बाह्य जगत के प्रति संवेदनशीलता तीव्र अनुभूति का आवेग, चयन या निर्माण की शक्ति इन सबके प्रति चिन्तन अवश्य विद्यमान रहता है। ये सब बातें मिलकर किसी भी मनुष्य की पूर्ण चैतन्य अवस्था का निर्माण करती है।

चेतना एक समझने की वस्तु है उसे परिभाषित करना इतना सरल नहीं है। मनुष्य चेतना के कारण ही अक्सर क्रियाशील रहता है तथा

चेतना रूप अत्यन्त सूक्ष्म और जटिल है। इसकी व्याख्या नियंत्रित शब्दों में बिल्कुल नहीं की जा सकती है। फिर भी विचारकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से चेतना की व्याख्या अपने शब्दों में करने का प्रयास किया है। 'चेतना' शब्द 'चित' से सम्बन्धित है।

संस्कृत आचार्यों ने चेतना को बुद्धि-ज्ञान, जीवन-शक्ति, भावना या विचार के अर्थ में ग्रहण किया है। घी:, मति, चित, सवित्त, प्रतिपत, ज्ञाप्ति, सत्व एवं जीवंत के अर्थ में भी चेतना शब्द का प्रयोग किया जाता है। सर्व विदित है 'चैतन्य लक्षणा जीव:' अर्थात् जीवन का लक्षण ही चेतना है।

**चेतना की परिभाषा:-**

चेतना का कोषगत अर्थ है - "चैतन्य, ज्ञान, होश, याद, बुद्धिगत, जीवन शक्ति"[1] आदि।

रामचन्द्र वर्मा अपने मानक हिंदी कोष में चेतना के विषय में लिखते हैं - "चेतना जीव या प्राणी के अन्तर्बाह्य तत्वों या बातों का अनुभव या मान करती है।"[2]

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट प्रतीत होता है कि चेतना के बिना मनुष्य जीवित नहीं बल्कि मृत के समान है अथवा चेतना से ही हमारा जीवन गति व विकास करने की शक्ति प्राप्त करता है। चेतना जागरूकता लाने और संकल्प लेने में अपनी अहम् भूमिका निभाती है जिससे सभी कार्य सम्पन्न हाते हैं।

**'चेतना' शब्द की व्याख्या:–**

'चेतना' शब्द का प्रयोग अक्सर मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक अर्थों मे ही किया जाता है। चेतना मानव की प्रमुख विशेषता मानी जाती है जिसे वस्तुओं - विषयों तथा व्यवहारो का ज्ञान भी कहा जा सकता है। मनोवैज्ञानिक अर्थ में - 'चेतना सभी प्रकार के अनुभवों का एक संग्रहालय है।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि चेतना मनुष्य की वह केन्द्रीय शक्ति है जो अनुभूत, विचार, चिन्तन, संकल्प, कल्पना आदि ये सभी क्रियाएँ करती है।

" 'चेतना' प्राणी मात्रा में रहने वाला वह आवश्यक तत्व है जो उसे निर्जीव जड़ पदार्थों से भिन्नता प्रदान करता है। 'चित् संज्ञा ने धातु में युच्, अन् टाप प्रत्ययों

के संयोग से चेतना शब्द की निष्पत्ति होती है। जिसका अभिप्राय है मन की वह वृत्ति या शक्ति जिससे जीव या प्राणी को आन्तरिक अनुभूतियों भाषा, विचारों आदि तथा बाह्य घटनाओं, तत्वों या बातों का अनुभव या ज्ञान होता है।"[3]

"चेतना शब्द की व्युत्पत्ति से भी इसी आशय की पुष्टि होती है। अमरकोष में इसको पूरी भगवद्गीता में ज्ञानात्मिका मनोवृत्ति तथा दर्शन में इसको स्वयं प्रकाशतत्व- कहा गया है। विज्ञान के अनुसार चेतना वह अनुभूति है जो मस्तिष्क में पहुंचने वाले अभिगामी आवेगों से उत्पन्न होती है। मनोविज्ञान की दृष्टि से चेतना मानव में उपस्थित वह तत्व है जिसके कारण उसे सभी प्रकार की अनुभूति होती है। संरचनावादी मनोवैज्ञानिक विल्हम वुट के अनुसार, चेतना में संवेदना, विचार, भावना तथा इच्छा सम्मिलित है। उसके अनुसार चेतना का अनुभव दो प्रकार का होता है- संवेदना तथा भावना संवेदना बाह्य जगत से आती है और भावनाएँ आन्तरिक होती है।"[4]

इस प्रकार हम चेतना शब्द कि व्युत्पत्ति एवं उसकी परिभाषा को अच्छी तरह समझ सकते हैं।

**<u>चेतना का स्वरूप:-</u>**

चेतना और मनुष्य का आपस में एक मौलिक संबंध है। चेतना जीवात्मा का वह विशेष गुण है जो मनुष्य को सजीव बनाती है और उसका चरित्र उसका वह संपूर्ण संगठन है। जो किसी की मनुष्यगत संपति नहीं होते। ये बहुत दिनों के सामाजिक प्रक्रम के परिणाम होते हैं। प्रत्येक मनुष्य स्वयं के वंशानुक्रम को निरंतर प्रस्तुत करता है।जिसे वह विशेष प्रकार के संस्कार पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त करता है। वह इतिहास को भी स्वयं में निरूपित करता है क्योंकि उसने विभिन्न प्रकार की शिक्षा तथा प्रशिक्षण को जीवन में ग्रहण किया है।

इसके अतिरिक्त वह दूसरे लोगों को भी अपने द्वारा निरूपित करता है, क्योंकि उसका प्रभाव उसके जीवन पर उनके उदाहरण, उपदेश तथा अवपीड़न के द्वारा पड़ता है।

एक बार मनुष्य की चेतना यदि विकसित हो जाती है, तब उसकी प्रकृति स्वतन्त्र हो जाती है। वह ऐसी अवस्था में विभिन्न प्रेरणाओं और भीतरी प्रवृतियों से खुद से प्रेरित होता, परन्तु वह उन्हें स्वतन्त्र रूप से प्रकाशित नहीं कर सकता। इस प्रकार मनुष्य की चेतना अथवा उसका विवेकी मन उसके अवचेतन अथवा प्राकृतिक मन पर अपना निरंतर नियंत्रण रखता है। मनुष्य और पशु में यही विशेष भेद होता है। मनुष्य की चेतना जागतृ होती है परन्तु पशु की बिल्कुल नहीं।

**चेतना का महत्व:-**

चेतना का हमारी जीवन-शैली में बहुत महत्व होता है। मनोविज्ञान की दृष्टि में चेतना मानव में उपस्थित वह तत्व है जिसके कारण उसे सभी प्रकार की अनुभूतियाँ प्राप्त होती हैं। चेतना के कारण ही हम देखते, सुनते, समझते और अनेक विषयों पर चिंतन-मनन करते हैं। इसी के कारण हमें सुख-दु:ख की अनुभूति प्राप्त होती है। मानव चेतना की तीन आवश्यक विशेषताएँ होती हैं- ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक तथा चेतना ही सभी पदार्थों की जड़-चेतन, शरीर-मन, निर्जीव-सजीव, मस्तिष्क-स्नायु आदि का निर्माण करती है तथा उनका रूप निरूपित करती है।

चेतना के विषय में हम स्पष्ट रुप से कह सकते हैं कि मनुष्य के मस्तिष्क में होने वाली क्रियाओं अर्थात् कुछ नाड़ियों के स्पंदन का परिणाम ही चेतना कहलाता है। यह अपने में स्वतन्त्र कोई अन्य तत्व नहीं होता है तथा शरीर चेतना के कार्य करने का यंत्र मात्र है, जिसे वह कभी उपयोग में लाती है और कभी उपयोग में नहीं लाती है परन्तु यदि यंत्र बिगड़ जाए या टूट जाए तो चेतना अपने कामों के लिए अपंग हो जाती है और चेतना के बिना बिल्कुल सुना व देखा नहीं जा सकता है।

चेतना हमें अनुभव और भावनाओं की पहचान करने की अनुमति देती है। यही चेतना सही है जोकि भौतिक नहीं है लेकिन कुछ आध्यात्मिक है। इस प्रकार चेतना मानसिक अनुभूति है। मानसिक गतिविधि और सोच के साथ भावना भ्रमित मत करो, दोनों वास्तव में भावना की प्रतिक्रियाएँ नहीं है। सकारात्मक और नकारात्मक भावनाओं का अपना एक स्तर है।

सकारात्मक क्रियाएँ जैसे - प्यार, क्षमा, दया-भाव व नकारात्मक क्रियाएँ जैसे - अज्ञान, स्वार्थ, घृणा आदि है। ये सब चेतना के तत्व नहीं हैं। इस प्रकार चेतना मानसिक होकर भी सामाजिक आरै सांस्कृतिक बनती जाती है।

**<u>नारीचेतना का अर्थ एवं स्वरूप :--</u>**

" 'नारी' शब्द नर से उत्पन्न माना जाता है तथा चेतना शब्द का अर्थ है प्राणी मात्र में रहने वाला वह तत्व है जो उसे निर्जीव जड़ पदार्थों से भिन्नता प्रदान करता । नारी-चेतना का अर्थ हुआ नारी में निहित जागरूक शक्ति। नारी समाज तथा परिवार का एक अभिन्न अंग है। जब तक नारी अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों के प्रति सचेत नहीं होगी तब तक न परिवार ठीक से चल सकता है और न ही समाज। प्राचीन काल से आज तक नारी में चेतना का निरन्तर विकास होता रहा है। वह निरन्तर विकास की सीढ़ियों पर चढ़ती रही है। नारी की प्रशंसा में शिवजी बतलाते हैं कि-नारी के समान न योग है, न जप है, न तप है, न तीर्थ है। यही इस संसार की सर्वाधिक पूजनीय देवता है क्योंकि वह पार्वती का रूप । उसके समान न कुछ था, न ही कुछ होगा।"[5]

"प्रारम्भ में नारी केवल एक विलास की सामग्री थी। नारी के विभिन्न रूप माँ, बहन, पुत्री आदि अधिक विकसित न हो सके थे। नारी का क्षेत्र बहुत संकुचित था स्त्रियों को घर की चार दीवारी के अन्दर ही रहना होता था उन्हें पढ़नेलिखने, नौकरी आदि की किसी भी प्रकार की आजादी नहीं - थी। नारियाँ एक प्रकार की घुटन भरी जिन्दगी व्यतीत कर रही थी। ये नारी चेतना का ही विकास है कि नारी वर्तमान में कन्धे से कंधा मिलाकर पुरुषों के साथ कार्य कर रही है। नारी के मन में पुरुष की दासता से मुक्त होने की ललक पैदा होती है। नारी अब शिक्षित भी हो चुकी है। कर्मभूमि उपन्यास की सुखदा पुलिस के सामने खड़ी होकर कहती है-क्यों भाग रहे हो? यह भागने का समय नहीं। छाती खोलकर खड़े होने का समय है। दिखा दो कि तुम धर्म के नाम पर किस तरह प्राणों का होम करते हो। भागने वालों की कभी विजय, नहीं होती।"[6]

वर्तमान समय में स्त्रियाँ जागरूक हो चुकी है। वो पुरुषों में शक्ति का संचार मात्र है। एक बार एक लेखक ने भी लिखा था कि यदि किसी देश की अवस्था का पता लगाना हो, तो वहाँ की स्त्रियों की दशा जानना बहुत जरूरी है। इसका तात्पर्य यह है कि जो समाज जितना अधिक उन्नतिशील होगा, वहाँ स्त्रियों की दशा उतनी ही विकसित और प्रभावशाली होगी।

"पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव से भारतीय नारी ने नई रोशनी, नई सभ्यता के प्रसार में देखा कि वह पति की दासी नहीं हैं। समाज में नारी को भी पुरुष के समान अधिकार है। बालविवाह -विवाह, अनमेल विवाह, विधवा- और वेश्यावृत्ति के विरुद्ध आन्दोलन चरम पर था। प्रतापनारायण श्रीवास्तव ने लिखा है- परस्त्रीपुरुष एक होकर रहें, दोनों में मतभेद न होने पावे। स्त्री को - गर्व न हो कि मैं स्वामी से बड़ी हूँ और न स्वामी को अभिमान हो कि ईश्वर ने सब बुद्धि मेरे ही हिस्से में रखी है। स्त्री घर की मालकिन है और पुरुष बाहर का, लेकिन दोनों में मतैक्य हो दोनों इस पवित्र प्रेम सूत्र में बंधे हों, जहाँ न राज है न अभिमान, न द्वेष है और न कलह"[7] भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं समाज में नारी को बहुत ही गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है एवं दर्शन नारी को प्रकृति रूपा मानता है। जो कि सृष्टि के मूल में है। पुरुष के रागात्मक जीवन में नारी हमेशा उच्च स्थान की अधिष्ठात्री रही है। वह परिवार की संचालिका भी रही है।

इस प्रकार नारीपुराणों से -चेतना की परम्परा वेदों-निरंतर चली आ रही है। अंग्रेजी प्रशासन ने शिक्षा में सुधार लाकर नारी को बहुत जागृत किया और नारी ने स्वाधीनता आन्दोलन में पुरुष के समानान्तर प्रयत्न किये। स्वतन्त्राता के पश्चात भारतीय नारी ने अधिकाधिक प्रगति की ओर कदम बढ़ाए और देश के उच्चतम प्रशासकीय पदों पर कार्य किया व अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में भी अपने मनुष्यत्व का प्रभाव स्थापित किया। तब से स्त्री जागृति हुई उसे पुरुष के समान अधिकार प्रदान किए गए। आज की नारी परम्परा की लीक पीटने की अपेक्षा एवं नई चुनौतियों भरी राहों पर चलने का खतरा उठाने को हमेशा तत्पर रहती है। इसके परिणामस्वरूप नारी के विकास की गति बढ़ी उसमें अधिकार बोध विकसित और अधिक विकसित हुआ।

**भारतीय नारी का मुक्ति संघर्ष :--**

जब कोई भी समाज व्यवस्था मनुष्य का शोषण करके उसे गुलाम बनाने का प्रयत्न करती है तब उस व्यवस्था से मुक्ति के लिए संघर्ष अवश्य ही प्रारंभ होता है। राष्ट्र और मानव समाज के विकास के लिए नारी मुक्ति आवश्यक है। नारी मुक्ति आन्दोलन ने नारी को जागृत किया है वह अपनी स्वतंत्रता के प्रति अब सचेत हो गई है।

भारत में सामाजिक पुनर्जागरण और राजनीतिक चेतना का विकास साथसाथ हुआ है। भारतीय समाज में व्याप्त अज्ञानता, दरिद्रता और - दासता के विरोध में लड़ाई भी एक साथ लड़ी गई। आशारानी व्होरा ने कहा है कि "उसे विदेशी दासता, पुरुष समाज की दासता और सामाजिक रूढ़ियों के विरूद्ध एक साथ तीनतीन मोर्चों पर लड़ना पड़ा। इसलिए उसके मुक्ति संघर्ष - अलग करके नहीं एक-को सामाजिक व राजनीतिक स्तरों पर अलग साथ ही देखना होगा।"[8]

प्राचीन काल से लेकर १९ वीं शताब्दी के अंत तक सभी देशों में नारी के अधिकार हमेशा बाधित होते रहे हैं। बीसवीं सदी के मध्य महिलाओं में जागृति आने लगी और वे परिवर्तन के लिए प्रयत्नशील भी हुई। ८ मार्च सन् १८५७ ई. को न्यूयार्क की कपड़ा मिलों में कार्य करने वाली महिलाओं ने संघटित होकर एक साथ संघर्ष किया था। वही से महिला संघर्ष का इतिहास प्रारंभ होता है। और उनकी चेतना का विकास माना जाता है। इसलिए उस दिवस को 'महिला दिवस' के रूप में हम आज भी मनाते हैं। पुरुष ने हर क्षेत्र में नारी को गुलाम बनाकर अपनी श्रेष्ठता स्थापित की जिसके कारण नारी मनुष्य न रहकर पुरुष के भोग की वस्तु बनकर ही रह गई। इस स्थिति का विरोध नारी मुक्ति आंदोलन की बुनियाद है। भारत में नारी मुक्ति का अर्थ पुरुष के विरोध के रूप में नहीं बल्कि उनके सहयोग के अर्थ में लिया जाना चाहिए। डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के अनुसार "नारी मुक्ति का अर्थ ही है नारी की वस्तु रूप से मुक्ति ।"[9]

विश्व की सांस्कृतिक व्यवस्था में स्त्री का स्थान हमेशा दूसरे दर्जे का रहा है। नारी को एक जैविक वस्तु के रूप में हमेंशा देखा गया है। डॉ. प्रधान संस्कृति ने स्त्री -सूर्यनारायण रणसुभे ने कहा है कि "दुनिया की पुरुष को उसके जैविक रूप में ही स्त्रीकारा है। एक जनन यंत्र के रूप में। उसने

कहीं पर भी उसे मनुष्य के रूप में स्त्रीकारा नहीं था। मनुष्य के रूप में उसे स्त्रीकारा जाए ऐसी उसकी माँग बहुत पुरानी है। संभवत: विश्व भर में पहली बार ऐसी माँग करने वाली तेजस्त्री स्त्री द्रौपदी है, जिसने भरे दरबार में तत्कालीन सभी तथाकथित पुरुषों से यह प्रश्न किया था कि मैं द्यूत में लगाई जानेवाली वस्तु हूँ या मनुष्य ? नारी मुक्ति का अर्थ ही है नारी की वस्तु रूप से मुक्ति ।"[10]

सर्व विदित है कि भारतीय नारी का मुक्तिसंघर्ष १९ वीं शताब्दी - से प्रारंभ हो गया था। राजा राम मोहनराय, दयानंद सरस्वती, विवेकानंद आदि ने नारी उत्थान के कार्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नारी के लिए अनेक सुधारवादी आन्दोलन चलाए गए नारी मुक्ति के क्षेत्र में पंडित रमाबाई का नाम विशेष उल्लेखनीय है। मागरेट नोबल, एनी बेसेंट, सुश्री व्लावत्सकी आदि महिलाओं ने स्त्रियों के उत्थान के लिए बहुत प्रयत्न किए। सन् १९२५ ई. में श्रीमती सरोजिनी नायडू भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षा बनी।

महात्मा गाँधी ने अपने आश्रम में तथा अपने सभी कार्यक्रमों में पुरुषों के समान ही स्त्रियों को भाग लेने के लिए निरंतर प्रेरित किया। डॉ. शीला रजवार के अनुसार "नारी ने यह अनुभव किया कि पति भक्ति और परिवार ही उसकी सीमा नहीं है वरन् राष्ट्र, देश, जाति और समाज के विकास कार्यों में भी उसका सहयोग अपेक्षित है।"[11] पुरुष और स्त्रियों के सम्मिलित प्रयासों के परिणाम स्वरूप ही सन् १९४७ ई. में भारत स्वतंत्र हुआ और सन् १९५० ई. में भारत का संविधान अमल में आया। संविधान में स्त्रियों को समान अवसर देने की व्यवस्था की गई। नारी मुक्ति आन्दोलन के परिणाम स्वरूप नारियों को यह सफलता मिली।

सन् १९४६ ई. में संयुक्त राष्ट्र संघ ने मानवाधिकार घोषणा पत्र जाहिर किया जिसमें स्त्रियों के अधिकारों को रेखांकित किया गया। इसी के परिणाम स्वरूप सन् १९७५ ई. का वर्ष अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया गया और बाद में अंतर्राष्ट्रीय महिला दशक मनाया गया शिक्षा, साहित्य, राजनीति, सिनेमा, ललित कला, समाजकल्याण, चिकित्सा आदि सभी क्षेत्रों में महिलाओं ने विशेष प्रगति की है। तथा अपना निरंतर ज्ञान बढ़ाया है।

भारतीय नारी का मुक्ति संघर्ष पाश्चात्य जगत के मुक्ति आंदोलन से बिल्कुल भिन्न है। आशारानी व्होरा ने नारी मुक्ति संघर्ष के बारे में कहा है कि -"हमारे यहाँ का 'नारी  मुक्ति संघर्ष' पश्चिम के 'नारी मुक्ति आन्दोलन' से एकदम भिन्न है। वहां स्त्रियों ने लगभग एक सदी की लंबी अवधि तक अपनी मुक्ति की लड़ाई पुरुषों से मुक्ति के रूप में, उनके विरुद्ध खड़ी होकर, अपमान झेलकर लड़ी। भारत में यह लड़ाई विदेशी दासता व प्राचीन रूढ़ियों के विरूद्ध एक साथ लड़ी गईपुरुष प्रतिद्वंद्वी नहीं, सहयोगी थे। -, जिसमें स्त्री पुरुष इसमें पहलकर्ता व प्रेरक रहे, नारियां स्वातंत्र्य सेनानी की गौरव गरिमा से मंडित और दोनों कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले सैनिक या हमराही । यही कारण है कि पश्चिमी नारियों को वोट का अधिकार पाने में ८० वर्ष लगे, भारतीय नारियों को इसके लिए आवाज़ उठाने के ५ वर्ष बाद ही यह अधिकार मिल गया।"[12]

इस प्रकार नारी मुक्ति संघर्ष ने नारी को मुक्त किया और नारी चेतना का निरंतर विस्तार किया है। नारी मुक्ति आंदोलन नारी की मनुष्य रूप में प्रतिष्ठा करने में बहुत सफल रहा है। नारीमुक्ति आंदोलन के इसी काल में - नारी संबंधी चिंतन चलता रहा और नारीवाद की अवधारणा अपना आकार खुद- ब-खुद लेती गई।

## हिन्दी साहित्य में नारीवादी चेतना का उद्भव एवं विकास :--

सामाजिक परिवर्तन और महिला जागृति के कारण नारीवादी विचारों को अधिक बल मिला और समाज में नारी की भूमिका को धीरेधीरे मान्यता- भी प्राप्त होने लगी। हिन्दी साहित्य में नारीवादी चिंतन और नारी साहित्य का प्रारंभ स्वातंत्र्योत्तर काल में हुआ है। वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास, आर्थिक, सामाजिक परिवर्तन के कारण नारी संबंधी पुराने मूल्य निरंतर टूटने लगे। शिक्षा और नई चेतना के विकास से नारी संबंधी दृष्टिकोण में बदलाव आने लगा। आज की नारी पुरुषप्रधान व्यवस्था और शोषण के विरोध में चुनौती बनकर समाज के सामने खड़ी है। नारी पर अक्सर जानेअनजाने - अन्याय होते रहे है। इसी अन्याय के कारण अनेक शताब्दियों से नारी पीड़ित होती रही है। इस पीड़ा की अभिव्यक्ति से नारीवादी चिंतन का प्रारंभ हुआ है।

नारीवाद वास्तव में एक समाजशास्त्रीय संकल्पना मानी जाती है। साहित्य के नजरिए से विचार करे तो पुरुषप्रधान संस्कृति से विमुक्त होकर नर से पीड़ित नारी का आक्रोश, संघर्ष, व्यथा, संवेदना, तनाव, औरत के प्रति होनेवाले अपमान के प्रति क्रोध, अपने अधिकार के लिए संघर्ष आदि विषयों का चित्रण करना, समस्याओं को उठाना और उसका समाधान प्रस्तुत करना नारीवादी साहित्य का लक्ष्य है। नारीवादी विचारधारा से हिन्दी साहित्य की लेखिकाएँ भी बहुत ज्यादा प्रभावित हुई हैं।

साठोत्तरी काल की कहानियों में चित्रित नारी, नारीवादी विचारधारा से ही प्रभावित है और वह पुरुषों द्वारा पुरुषों के अनुकूल निर्मित व्यवस्था का अब विरोध करने लगी है। पुरुष संस्कृति द्वारा बनाए गए मूल्यों के स्थान पर वह समान संस्कृति के मूल्यों का निर्माण करने में रुचि रखती है।

नारीवादी विचारधारा का प्रभाव स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी लेखिकाओं की कहानियों में अक्सर दृष्टिगोचर होता है। नारी की मनुष्य रूप में प्रतिष्ठा, नारी की अस्मिता की रक्षा, पुरुष सत्ता केन्द्रित व्यवस्था के प्रति विरोध का स्वर आदि विषय आज प्रमुखता पाने लगे हैं। सुमित्रा 'प्रतिकार', अनिता भारती नई धार, हेमलता महिश्वर 'करका मनका डरी के', रजनी तिलक 'बेस्ट ऑफ करवाचौथ', कौशल पवार ' हार गई ज़िंदगी', रजत रानी मीनू 'सरोगेट मदर', डॉ. सुनीता देवी ' उमा चली गई दिल्ली', दीपा ' जीत', वंदना 'नालियाँ', सुशीला टाक भौरे 'कड़वा सच', रजनी दिसौदिया 'छोटी बहू' आदि कहानियाँ स्त्रीप्रतिष्ठा, -स्त्री स्वतंत्रता, स्त्री दृष्टि को व्यक्त करके लिखी गई हैं। साहित्य के विविध स्वरूपों में नारीवादी दृष्टिकोण प्रतिबिंबित हुआ है। वर्तमान समय में लेखिकाओं द्वारा लिखी गई कहानियाँ, उपन्यासों और कविताओं में इस नारीवादी चेतना को देखा जा सकता है। स्वातंत्र्योत्तर काल में महिला लेखन अपने पूरे निखार पर नजर आता है। जीवन के गंभीर विषयों को इस दौर की लेखिकाओं ने बड़ी ही सहजता से उठाया है। नारी ने नारी की मनः स्थिति को बहुत अच्छी तरह पहचाना है।

इस प्रकार बीसवीं सदी महिला जागरण की सदी रही है। इस काल में महिलाओं ने संघटित होकर अपने अधिकारों की लड़ाई अपनी चेतना के अनुसार लड़ी। नारी मुक्ति आंदोलन, सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकता ने नारी चेतना को बहुत अधिक विकसित किया। भारतीय

संविधान के कारण नारी को उनके सभी प्रकार के अधिकार प्राप्त हुए। नारी की अपनी एक स्वतंत्र पहचान निर्मित हुई। इस प्रकार नारीवादी विचारधार का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर पड़ा है।

प्रभा खेतान के अनुसार "नारीवादी विचारों से स्त्री पाती ज्यादा है, खोती कम है। उसे तो बस भयमुक्त होकर एक लंबा रास्ता तय करना है। सारी भूमिकाओं के सफल निर्वाह के बावजूद वह छोटेछोटे सुखों के लिए - समाज बड़ा परपीड़क रहा है। जो चला आया है, -तरस जाती है, क्योंकि पुरुष उन पारंपरिक तर्कों को अपनाने के बजाए यदि स्त्री बदलाव की अपेक्षा रखे, यदि वह रूके नहीं बस चलती रहे, नए मुकामों से आगे और आगे, तो इसे ही मुक्ति का अभियान कहा जाएगा।"[13]

हिन्दी साहित्य के महिला लेखन में नारीवादी विचारधारा केन्द्र में रही है। पति, परिवार, समाज, व्यवसाय, दाम्पत्य जीवन आदि जीवन की विविध स्थितियों में खोई हुई नारी की वेदना, तत्जन्य समस्या और परोक्ष रूप से समाधान की लघु भूमिका देकर अपनी दृष्टि का परिचय इन महिला लेखिकाओं ने सफलतापूर्वक दिया है। अतः हिन्दी साहित्य के महिला लेखन में नारीवादी चिंतन का स्वर अवश्य झंकृत होता है। जिसमें नारी चेतना अपने चरम स्थान पर मानी गई है।

बेचैन जी की रचनाओं में नारी चेतना को उभारने के लिए उनकी रचनाओं में विद्यमान नारी चेतना को निम्न रूप में व्यक्त कर रहे हैं--

**बेचैन जी की कहानियों में नारी चेतना :-**

डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी की कहानियों में नारी चेतना की बात की जाए तो इनकी कहानियों की नारी चेतना बहुत ही प्रबल और अविश्वसनीय है जो कि हर परिस्थिति को परखने में और समझने में सम्पूर्ण है। इस आधार पर इनकी कहानियों की नारी पत्रों में नारी चेतना के उदाहरण इस प्रकार है:-

दाताराम खामोश बैठे सिर पर हाथ रखकर सोचने लगा कि क्या कहीं कुछ गलत कह दिया है मैने। "पर सरवती ने साफ़साफ़-

कहा....नहीं, वे अब मुझे नहीं अपनाएंगे? क्या आप नहीं जानते कि मैं जिस उच्च संस्कारी कुलीन ब्राह्मण परिवार में जन्मी हूं, वहाँ बेटी ब्याह के बाद बेदखल हो जाती है। धनसंपत्ति पर बेटों का ही एकाधिकार होता है। जिस - घर से वह ब्याह कर प्रवेश पाती है, उस घर से उसकी अर्थी ही वापस निकाली जाती है, और फिर प्रेमविवाह वह भी गैर जाति में करने वाली - लड़की: वह तो सात जन्म भी स्वीकार नहीं की जाती। यह परम्परा है, अघोषित सामाजिक कानून है, जिसका ये स्वाभाविक पालन करते हैं। इसी परिधि के भीतर वे जीतेमरते हैं।- इसलिए वे मुझे क्यों अपनाएंगे।"[14]

उपर्युक्त पंक्तियों में नारी चेतना हमें दिखलाई देती है कि यहाँ सरवती के शब्दों से ही परिलक्षित हो जाता है कि उसकी चेतना एक खुले विचारों वाली चेतना है जिस आधार पर वह इन विचारों को व्यक्त करती हुई प्रतीत हुई है।

डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन' की 'भरोसे की बहन' शीर्षक कहानी सत्ता व राजनैतिक विचारधारा से लैस ब्राह्मणवादी कूटनीति को बखूबी दर्शाती है। कहानी का मुख्य पात्र रामभरोसे दलित राजनीति का कार्यकर्ता है जो बराबर यह सपना देख रहा होता है कि  कोई दलित मुख्यमंत्री बने और दलित राजनीति के सत्ता में आने से दलित जीवन की समस्याओं का समाधान अवश्य होगा। रामभरोसे के परिवार में दो बेटे बेलदारी अर्थात् मजदूरी करते हैं, बेटी की पढ़ाई छूटने के कगार पर आ जाती है और घर में साबुन, तेल आदि की लगातार किल्लत रहती है। मकान जर्जर हो रहा है, तब भी रामभरोसे को बहन छायावती की राजनीति में पूर्ण आस्था होती है।

"भीमा की माँ थोड़ा सब्र करिवी सीखौ। वक्त बदल रहा है। जब अंग्रेजों का साम्राज्य नहीं रहा तो सवर्णों की सत्ता कैसे रहेगी? एक दिन तो घूरे के हूं दिन फिरे हैं। फिर हम तो इंसान हैं, दो आँखें, दो हाथ और दो पैरों वाले जीते-जागते इंसान। पर तुम औरत जात का जानो सत्ता की चाबी से कैसे सब ताले खुले हैं? भैन जी के हाथ में चाबी है। सब क्षेत्रों में हमारी भागीदारी होने वाली है, बड़े-बड़े तीस मारखाँ बहन जी के चरण स्पर्श करते हैं। अपनी कौम के अफसर और नेता भैन जी के आगे घुटने टेक के जमीन पै बैठ जाबै हैं। बिल्कुल महारानी के दरबार में प्रजा, चारण भाट और विदूषकों की तरह।"[15]

इन पंक्तियों से पता चलता है कि भीमा की माँ (रामकली) को राजनीति की गहरी जानकारी है तथा उनकी नारी चेतना राजनीतिक रूप से इतनी प्रखर है कि बड़े से बड़े दिग्गज नेता उनके सामने घुटने टेक देते हैं। इन पंक्तियों में नारी चेतना के भाव हमें देखने को मिल जाता है।

इसके अतिरिक्त एक अन्य उदाहरण दृष्टव्य है कि--"बन्द करो अर्जियाँ-फर्जियाँ ऐसा कौनसा काम- है, जिसे हमारी बहन जी सत्ता में रहते नहीं कर सकतीं? सत्ता की चाबी उनके हाथों में है। हर, बैकलॉग वैंकेसी, का ताला ये खोलेंगी, जमीन बांटेंगी, दलित बेटियों की शादियाँ करायेंगी, दलित डॉक्टर बनाने की -साहित्य बिकवायेंगीं। पुरस्कार दिलावायेंगी। तुम मास्टर बात करते हो वे कुलपति, रजिस्ट्रार, प्रोफेसर बना सकती हैं। बहन पर भरोसा रखना सीखो।"[16]

बेचैन जी की इन पंक्तियों में बहन जी के प्रबल विचार एवं चेतना तथा उनकी शक्ति को व्यक्त किया है। जो कि नारी चेतना के आधार पर यहां बहन जी की राजनीतिक चेतना बहुत ही प्रभावी वर्णन किया गया है।

अतः राम भरोसे ने बात पर जोर देकर कहा की उसे इस बात की खुशी है कि बड़ीबड़ी जातियों के लोग छायावती के चरण स्पर्श करते हैं - और अब वह दिन बिल्कुल भी दूर नहीं जब सवर्णों की सत्ता चली जाएगी और देश में दलितों को पूर्ण अधिकार मिल जाएंगे।

जबकि दूसरी ओर इस कहानी में रामभरोसे की पत्नी रामकली रामभरोसे के राजनैतिक कार्यकर्त्ता होने की स्थिति पर व्यंग्य कसती रहती है-"साठ साल तें ये ही डिरामा चलि रयौ है। कै अब की न्याय मिलेगौ के अबकी बराबरी मिलेगी, सब पढ़ेंगे सब बढ़ंगे, सब सफेद झूठ। मैं सच कहती हूँ तुम ये पार्टी-वार्टी कौ चक्कर छोड़ो, बेमतलब टेम खराब करिवौ सीख गये हो नेतागिरी में।"[17]

इन पंक्तियों में बेचैन जी ने नारी चेतना का बड़ा ही व्यंगात्मक रूप प्रस्तुत किया है यहाँ पर राम भरोसे की पत्नी का अपने पति पर व्यंग्य करने की चेतना को दर्शाया गया है। जो कि अपने पति के राजनीतिक गतिविधियों में जुड़ने का कोई फल नहीं मिलने वाला है। इस तरह अपने पति को समझाती है।

बड़े ही सपाट वक्तव्य में यह कह जाती है कि--"गरीब की कोई भैन-फेनि नाय होति, अमीर को सौ बहनें राखी बाँधे हैं।"[18]

"मूलसिंह की पत्नी मीना पीठ के नीले निशानों को गर्म रूई से सेंक रही थी। वह घूंघट का पल्लू नीचे करते हुए बोली - "मेरी बात तो कोई सुनतुई नांय है। का जरूरत ही गांव में लीला खेलन की। गाँव बारे कला देखेंगे, हुनर की तारीफ करेंगे पर जात की तारीफ कौन करेगो सोचा तक नांय।"[19]

यहां मूलसिंह की पत्नी समाज पर आक्षेप करते हुए कहती है कि गाँव वाले कला की तारीफ़ करेंगे हुनर की तारीफ करेंगे पर कोई जात की तारीफ नहीं करेगा फिर क्यों जाते हो लीला खेलने के लिए। इन पंक्तियों में नारी की चेतना को प्रबल होते हुए हम साक्षात देख सकते हैं।

"यह सब माँ बाप ने जबरस्ती अपनी मर्जी से मेरे गले में काठ का पांव तोड़वा लड़का दिया है। जैसे मै इंसान नहीं बेकाबू पशु हूँ। वह पढ़ाई-लिखाई कम टुच्ची नेतागिरी, जागरण-पार्टियां और प्रॉपर्टी डीलिंग अधिक करता था।"[20]

प्रस्तुत पंक्तियां 'भरोसे की बहन' से ली गई हैं जिसमें लेखक ने नारी चेतना को दर्शाया है कि जो नारी यहां अपने पति की आलोचना करते हुए कह रही है की मेरे माँ बाप ने ऐसे लड़के से मेरा विवाह किया है जो पढ़ाई लिखाई कम और नेता गिरी में ज्यादा रहता है।

"लवली की एक सोशल वर्कर फ्रैंड सपना मिश्रा जो कक्षा आठवीं से दसवीं तक उसकी क्लास फ़ैलो रही थी, उसने एक हिंदी आलोचक पर साहित्य सभा में एतराज दर्ज कर दिया उसका कहना था आलोचक ने उसकी तुलना रीतिकाल की नायिका से की है। उसे रति की मूर्ति कहा है। उसने उसे साहित्य पढ़ाने के बहाने अश्लील संवाद शुरू किया।"[21]

इन पंक्तियों में बेचैन जी द्वारा रचित कहानी की पात्र लवली अपनी मित्र सपना मिश्रा के साथ हुए अश्लील संवाद में दोनों की चेतना को दर्शाने का प्रयास किया है जिसमें नारी की चेतना हमें साफ नज़र आती है।

"वह सब करके भी क्या हासिल कर सकती हो माधवी?" "क्या नहीं कर सकती! 'महिला आयोग' में केस ले जा सकती हूँ, प्रेस कॉन्फ्रेंस करा सकती हूँ,

जलती मशाल का मोर्चा निकलवा सकती  हूँ। परन्तु आप लोगों को मेरी बात सुननी चाहिए, इससे ज़्यादा अपेक्षा करने लायक नही समझती मैं आपके इस संघ रूपी गिरोह को जिसे अपने 'निष्पक्ष संघ' नाम देकर निष्पक्ष शब्द की गरिमा के साथ भी मजाक उड़ा रहा है।" माधवी चिड़चिड़े स्वभाव की किन्तु बोल्ड लेडी थी।"[22]

प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने नारी पात्र माधवी के आक्रोश तथा उसके हौसले को दर्शाने का प्रयास किया है जिससे उसके बोल्ड विचारों का तथा उसके व्यवहार में व्याप्त सामाजिक चेतना को देखा जा सकता है।

**<u>बेचैन जी की कविताओं में नारी चेतना :-</u>**

दलित साहित्यकार एवं कवि दलित अधिकार एवं वंचित बेसहारा महिलाओं का पक्षधर रहा है। इसलिए उसका ध्यान रानी महारानी सुविधा भोगी महिलाओं की ओर कम आकर्षित हुआ है। यद्यपि चरित्र उदार और सहृदय हो तो उसे सवर्ण महिला भी बुरी नहीं लगती हैं। तथा नारी चेतना को अपनी कविताओं में कवि ने उजागर किया है। 'औरत' कविता में औरत की वेदना, पीड़ा एवं उपेक्षा का चित्रण हमें इस प्रकार देखने को मिलता है--

"ये औरत

यह मजूरिनी औरत

ये औरत

ये भिखारिनी औरत

राजधानी की

तंग बस्ती में

गँवा बैठी है

अपने ज़िस्म का

पाकीजापन

पेट की आग में, यानी कि

तंगदस्ती में।"[23]

बेचैन जी की नई फसल कविता की इन पंक्तियों में नारी की भिन्न-भिन्न परिवेश की चेतना को दर्शाया गया है। जो कि कभी मजदूरी करती हुई प्रतीत होती है तो कभी अपने परिवार के लिए भिखारिन बन जाती है और कभी-कभी तो उसे अपने ज़िस्म को भी बाज़ार में बेच देना पड़ता है। यहाँ नारी की परिस्थिति के अनुसार उनकी चेतना पर भी प्रभाव पड़ता है। जो कि दयनीय अवस्था को व्यक्त करता है।

'टिकाऊ पति' में दलित महिला को भी स्वावलंबी बनाने की बात की गई है। जो कि नारी की स्वतंत्र चेतना को व्यक्त करता है एक अंश देखें -

"दुल्हनें खुद भी कमाएं

दुल्हे जो बेरोज़गारी के कारण

गृहस्थी से पलायन कर रहे हैं

उन्हें टिकाऊ पति बनाएँ।"[24]

प्रस्तुत प्रसंग में बेचैन जी की कविता में 'टिकाऊ पति' की इन पंक्तियों में नारी चेतना को दर्शाया गया है की दुल्हनों ने अब गृहस्थ जीवन को छोड़ दिया है क्योंकि आज दूल्हे बेरोजगार घूम रहे हैं तो दुल्हनें अब खुद कमाएँ और अपनी चेतना को विकसित करें।

बेचैन जी की कविता 'लड़की ने डरना छोड़ दिया' में स्त्री शिक्षा के महत्व पर जोर दिया गया है क्योंकि शिक्षा प्राप्त करके वह किसी भी बात को मजबूरी में नहीं अपनाएगी। तथा अपने विचारों को अपनी चेतना के अनुसार विकास के पथ पर चलाएगी। नारी चेतना को व्यक्त करती कुछ पंक्तियां इस प्रकार है--

"घुट-घुटकर

अब नहीं मरेगी,

मंच पै चढ़कर बोलेगी।

समय और शिक्षा-

ने उसके चिंतन का रूख

मोड़ दिया।

चुप्पा रहना छोड़,

दिया, लड़की ने डरना छोड़ दिया।"[25]

उपर्युक्तपंक्तियां बेचैन जी की कविता 'क्रौंच हूँ मैं' की इन पंक्तियों में नारी चेतना को दर्शाया गया है कि आज की नारी ने अब डरना छोड़ दिया है वह घुट-घुट कर अब नहीं मरेगी। अब वो अपने विचारों को मंच पर चढ़ कर व्यक्त करेगी क्योंकि आज की नारी पढ़ी-लिखी नारी है जिसने अपने चिंतन में परिवर्तन कर दिया है चुप रहकर डरना छोड़ दिया है।

श्यौराज सिंह बेचैन जी की 'फूलन की बारह मासी' कविता में अति पिछड़े समाज की बेटी फूलन जातिभेद और पुरुष अत्याचारों का शिकार हुई परन्तु उसने भी विद्रोह करके संघर्ष द्वारा अपने अत्याचारों का बदला लिया। इस कविता में स्त्री पुरुष की स्वतंत्रता और सुरक्षा के पक्षधर युवा कवि की व्यथा का एक हिस्सा है तथा नारी चेतना का आक्रोश व्यक्त हुआ है--

"जेठ जुल्म हो रहा,

दुखी नारी जाति

आओ करें विचार

जली क्यों बिना तेल बाती

चैन की नींद नहीं सोई

गांवों में आतंक

आँख आँसू भरभर रोई-

बुरे हालातों की मारी

गृहस्थी जीवन छोड़

दस्यु भयी फूलन सी नारी।"[26]

प्रस्तुत पंक्तियों में बेचैन जी की 'फूलन की बारह मासी' कविता में नारी के ऊपर होते हुए जुल्म को दिखाते हुए नारी के हालातों का वर्णन किया है तथा नारी की चेतना को व्यक्त किया है।

'नारी उत्थान' से सम्बन्धित कवि ने अनेकों कविताएं रची है। 'बच्ची ने बच्ची पैदा की', ,'न रुकी मेरे लिए', 'तुम्हारी दुनिया', 'मुक्तक', 'लक्ष्मी मिलेगी', 'ये आलम', 'तुम एक बार', 'कौन क्या बिगाड़ेगा','साबित हुआ', 'किधर जाएंगे हम', 'खाट खड़ी है', 'प्यार जमालों','न मरने के लिए', 'मुह खोलो सच होता', 'मातृ ऋण परचम', 'मजूर वन्दन इंतजार' आदि कविताओं में नारी चेतना का स्वर उभर कर आया है।

कवि ने आधुनिक युग की समस्त समस्याओं को अपनी रचनाओं में उजागर किया है। सामाजिक जीवन की प्रत्येक समस्या को निकटता से भोगा है और उनका उपाय भी बताया है। इसके तहत कवि लिखते है कि--

"एक नारी

दीनहीन-

बोली-

'साजन प्रवीन'

तन खारिज़-

मशीन,

अंगपुरजा-

भये छीन,

बच्चे पैदा हुए तीन,

अब, विराम दो पिया।"[27]

उपर्युक्त पंक्तियाँ बेचैन जी की कविता 'क्रौंच हूं मैं' की हैं जिसमें कवि ने नारी चेतना को दर्शाया है जिसमें नारी अपनी दीन-हीन पीड़ा को अपने पति को बता रही है तथा उस पर हो रहे अत्याचार को विराम देने को कह रही है। इसी प्रकार 'औरत की गुलामी' शीर्षक कविता में कवि स्त्री की गुलामी को रेखांकित करते हुए नारी चेतना पर प्रकाश डालते हैं कि वह उपेक्षित ही पैदा होती है--

आज तमाम सामाजिक रूढ़ियां टूट रही है। लड़कियों का सम्मान माँबाप कर र-हे हैं बजाय लड़कों के। कवि यहाँ समाज से प्रश्न करता है कि फिर भी लड़कों को इतना सम्मान क्यों? जबकी लड़की ज्यादा सेवा कर रही हैं बजाय लडको के। जिसमें नारी की चेतना हमें दिखाई देती हैं नारी चेतना की कुछ पंक्तियाँ ये हैं--

"लड़की सेवा करे-

बुढ़ापे में तो क्यों लड़का चाहें?

इसी प्रश्न के-

समाधान ने भीतर तक झकझोर दिया

चुप्पा रहना छोड़

दिया, लड़की ने डरना छोड़ दिया।"[28]

उपर्युक्त पंक्तियाँ बेचैन जी की कविता 'क्रौंच हूं मैं' की हैं जिसमें कवि ने नारी चेतना को दर्शाया है जिसमें नारी लड़को की तरह बुढ़ापे तक ख्याल भी रखे उसे बुढ़ापे तक चाहे भी ऐसा वह क्यों करे। इसलिए उसने चुप रहना छोड़ दिया और समाज में डरना भी छोड़ दिया। स्वाभिमान के साथ जीना चाहती है।

इस प्रकार बेचैन जी की 'विराम दो' नामक कविता भी एक स्त्री की व्यथा बयान करती हुई हमें प्रतीत होती है। पुत्री की तुलना में पुत्र की प्राप्ति आज भी समाज में अत्यंत अनिवार्य उपलब्धि मानी जाती है और पुत्र को पुत्री की तुलना में आज भी अधिक महत्व दिया जाता है। प्रस्तुत कविता में तीनतीन पुत्रि-यों को जन्म दे चुकी माँ की व्यथा दर्शाइ गई है। लड़के की

लालसा में वह और संतान बिल्कुल नहीं उत्पन्न करना चाहती। अतः पति से वह अनुरोध करती हुई यह संदेश भी देती है कि लड़की और लड़के में कोई फरक नहीं होता है। दोनों बराबर हैं जिस प्रकार लड़का महत्व रखता है उसी तरह लड़की का भी अपना महत्व है। जिसको पुष्टि करती पंक्तियां निम्नलिखित हैं--

बेटी हैं- "बेटा

समान

कह रहा है

संविधान

मालमत्ता-,

के हकों का

है समान

प्रावधान

नये मौसम

की नब्ज

को लो जान हे! पिया।

अब विराम दो, पिया।

कहा मान लो पिया।।"[29]

उपर्युक्त पंक्तियाँ बेचैन जी की कविता संग्रह 'क्रौंच हूं मैं' की 'विराम दो' की हैं जिसमें कवि ने नारी चेतना को दर्शाया है जिसमें नारी लड़का-लड़की को एक समान मानती है विचारों तथा अपनी चेतना को अपने पति के समक्ष रखती हुई प्रतीत होती है।

वास्तव में दलित व स्त्री के लिए शिक्षा ही केवल एकमात्र उपाय है। चूँकि तथाकथित धर्मग्रंथों में परंपरागत विचारधारा के अनुसार स्त्री को पराधीन बना कर रखा गया है तथा सीता, द्रौपदी और अहिल्या उनके

आदर्श बना दिए गये थे। आधुनिक समता आंदोलन में ये पात्र किसी भी प्रकार से आदर्श नहीं हो सकते। ये पात्र पुरुषवादी मानसिकता में रहकर रचे गये हैं और ये केवल पुरुषों के आगे हार मानते हुए पात्र हैं। कवि बेचैन जी 'वह उठी' नामक कविता में संघर्षरत और बराबरी की चाह रखने वाली स्त्रियों को भी वाणी देते हैं तथा उनकी चेतना को उजागर कारते हुए कहते हैं:--

“नारी विरोध में

रचे गये उन ग्रन्थों में

लूका देती

वह निकल पड़ी बेचैन नारि।

पुरुषीय प्रभुत्व

प्रदत्त प्यार का यह प्रदण्ड।

कैसे रख पाये।

स्पंदित उर को अखण्ड।"[30]

प्रस्तुत पंक्तियाँ बेचैन जी की कविता संग्रह 'क्रौंच हूं मैं' की वह उठी की हैं जिसमें कवि ने नारी चेतना को दर्शाया है।

कवि श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी स्त्री अधिकारों के प्रति अत्यंत सचेत हैं। विवाह में मिलने वाले दहेज को कवि 'भीख' संज्ञापित करता है। पुरुष की समानता में सबसे बड़ी बाधा है। यह लड़की-दहेज स्त्री के अपमान के साथसाथ आधुनिक सभ्यता का भी अपमान है। उनकी 'बिटिया' नामक - कविता में अभिव्यक्त है कि समाज में दहेज प्रथा का दानव अविवाहित लड़कियों के स्वप्नों को लील रहा है। समाज में पैसों का बढ़ता हुआ प्रभाव, मूल्य और टूटते आदर्श चिंता का विषय बन-घटते हुए जीवनते जा रहे हैं।

लड़की तो बेचारी अंधी है और चाहती है कि उसकी आँखें ठीक हो जाएँ। वह सब कुछ देखे किंतु यहाँ रचनाकार ने पितृसत्तात्मक समाज के अंधेपन की ओर संकेत कर रहा है--

-बाप ने-"लड़की के मां

नहीं सिखाया विरोध

मान लिया बोझ और

कर लिया सब्र।

लड़की मन की,

आँखों से देखती है

और आँखों में झोंकी हुई धूल

साफ करना चाहती है

क्योंकि अंधेरा

कुदरत का नहीं, समाज का है।"[31]

उपर्युक्त पंक्तियाँ बेचैन जी की कविता संग्रह 'क्रौंच हूं मैं' की हैं जिसमें कवि ने नारी चेतना को दर्शाया है जिसमें नारी के द्वारा समाज के अंधेपन को दिखाया गया है।

दलित समाज की महिलाएं पुत्र के बीमार पड़ने पर रोजीरोटी की समस्या - से जूझ रही माँ वैद्य को देने के लिए पैसे कहाँ से लाए। इसी चिंता में डूबी की पीड़ा को कवि ने --'लोक मल्हार' नामक कविता में गा रही है

“कड़वी, दुखीली,

बैरिन रात है।

रोजी-रोटी की

उलझन ख़ास है।

मेरी बहना ललुआ

पड़यौ है बीमार

नक़द माँगे वैद्य जी.... मेरी

करजा में गिरवी

खेती बाप की

माया है पटवरिया

के पाप की

मेरी बहना

पुलिश, वकीलन की मार,

पड़ी है मोपे बेतुकी।"..... [32]

उपर्युक्त पंक्तियाँ बेचैन जी की कविता संग्रह 'नई फसल कुछ अन्य कविताएं' के संग्रह की कविता 'लोक मल्हार' की हैं जिसमें कवि ने नारी चेतना को दर्शाया है जिसमें नारी पुत्र के बीमार पड़ने पर रोजीरोटी- की समस्या से जूझ रही माँ वैद्य को देने के लिए पैसे कहाँ से लाए। इसी चिंता में डूबी माँ की परिस्थिति को कवि ने कविता में गीत के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया है।

कमानेपत्नी दोनों का -खाने में संयुक्त हिस्सेदारी से पति-दायित्व बोध बढ़ता है और उनके गुणों की पहचान भी बनती है। कम से कम दलितों की नई पीढ़ी में लड़की अथवा बहू का वर्किंग होना आवश्यक है--

“दुल्हनें खुद भी कमाएँ

दुल्हे, जो बेरोज़गारी के कारण

गृहस्थी से पलायन कर रहे हैं

उन्हें टिकाऊ पति बनाएँ।"[33]

उक्त पंक्तियों में स्त्री-पुरुष की समानता व स्त्री को भी स्वतंत्रता प्रदान की गई है अतः कवि स्त्री चेतना के प्रति यहाँ अत्यंत सचेत नज़र आते है। दोनों को संयुक्त योगदान से घर परिवार, देश का विकास होता है।

कवि श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने अपनी 'कुछ भी नहीं बदलेगा' नामक कविता में कहते हैं कि खुदखुद कुछ भी नहीं बदलेगा। भाग्य या -ब-

भगवान के भरोसे बैठे रहने से किसी भी समस्या का हल नहीं होने वाला खुद संघर्षरत करना होगा व कर्मशील बनना होगा तभी परिवर्तन संभव है। केवल ईश्वर व परमात्मा में विश्वास करने से नौकरी नहीं लगती, लड़की की शादी नहीं हो जाती या जीवन में कोई सुधार नहीं होगा। इसके लिए स्वयं को प्रयास करना जरूरी है प्रस्तुत पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

-"तुम बैठी रहो

हाथ पर हाथ रखे हुए,

भगवान आयेगा

तुम्हारी नौकरी

तुम्हारी शादी

और घर की कैद से

तुम्हारी आज़ादी

दिलाने का प्रबन्ध करेगा।"[34]

उपर्युक्त पंक्तियाँ बेचैन जी की कविता संग्रह 'क्रौंच हूं मैं' की कविता 'कुछ नहीं बदलेगा' की हैं जिसमें कवि ने नारी चेतना को दर्शाया है जिसमें नारी को प्रेरित करते हुए कवि कहता है कि खुदखुद-ब- कुछ भी नहीं बदलेगा। यहां कवि बेचैन यह बताते हैं कि दलित स्त्री का शोषण और संघर्ष बहुस्तरीय है। स्त्री होने के नाते पितृसत्ता हमेशा उसके आड़े आती है पर यह राह तब और भी कठिन हो जाती है जब उसकी पितृसत्ता के साथ ही साथ जातिवादी मानसिकता से भी मुठभेड़ होती है। सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक पिछड़ेपन के चलते दलित स्त्री शोषण का शिकार बनती है। इसलिए लेखक कहता है कि दलित आदिवासी स्त्रियां या कहें पितृसत्तात्मक समस्याएं भी मुंह बाए खड़ी है। उनकी रचनाओं में जाति और पुरुष प्रधानता से जुड़े मुद्दे होते हैं जो दलित पुरुष लेखकों की रचनाओं से उन्हें अलग करते हैं। वे स्त्री - पुरुष से ज्यादा मनुष्य है।

**बेचैन जी की आत्मकथा में नारी चेतना :-**

बेचैन जी की कहानियों एवं कविताओं में नारी चेतना को देखने के पश्चात् उनकी आत्मकथा में भी हमें नारी चेतना देखने को मिल जाती हैं जिसमें उनके विचार एवं उनकी परिस्थितियों का हमें पता चलता है। उनकी आत्मकथा में विद्यमान नारी चेतना के उदाहरण हम निरूपित कर रहे हैं।

सदियों से हमारे समाज मे जाति, धर्म, वर्ण, संप्रदाय, रंग, लिंग के आधार पर शोषण के अनेक आयाम विद्यमान है। इनमें लिंग के आधार पर समाज में शोषण भारतीय संस्कृति का एक अत्यंत कटु सत्य है। हमारी जीवन शैली को प्रभावित करते तमाम हिन्दू धर्म ग्रंथ नारी के शोषण और उनकी गुलामी से भरे पड़े हैं। हिन्दी साहित्य में भी स्त्री को पुरुष पर निर्भर दर्शाया गया है। यानी आज की नारी समाज में खुलकर विरोध करने लग गई है और उसने अपनी मंजिल काफी हद तक समाज में पा ली है। आज की नारी में जिस चेतना की उसे जरूरत है वह उसमें अब नजर आने लगी है।

" सम्भवतया यह घटना 1970- 71की है। तब हम दिल्ली की एक झुग्गी में रहते थे। मैं एक होटल में चालीस रुपये महीना की पगार पर खाना खिलाता और बर्तन साफ करने का कार्य किया करता था। अम्मा यहाँ पास ही चक्की पर अनाज साफ करती थी। मौसी ऊँची पढ़ाई पढ़ रहे अपने बेटे से मेहनत करने का रहस्य छिपाती थी। वे होस्टल में रह कर माँबाप के - गुजारे के बारे में कम जानते थे। उस चक्की को एक पंजाबी महिला चलाती -थी। वह मेरी माँ से अक्सर कहती थी कि "सूरजमुखी, औरत में हिम्मत होनी चाहिए। विधवा तो मैं भी हुई थी। पर मैंने विधवा होकर भी अपने बच्चों को डॉक्टरी और इंजीनियरिंग में भेज दिया। पर तुम गाँव की औरतें बुजदिल होती हो। हमेशा मर्द पर ही निर्भर रहती हो। अपनी खुद्दारी को पहचानती ही नहीं हो।" अम्मा कहती- हाँ वीवी जी, आप जैसी हिम्मत वाली हम कहाँ हैं।"[35]

बेचैन जी की आत्मकथा की इन पंक्तियों में नारी की चेतना बहुत ही प्रखर है और वह और अपने बच्चों के भविष्य के लिए बहुत ही जिज्ञासु एवं कर्तव्यनिष्ठ हैं। गाँव की औरतों पर कटाक्ष करती हुई वह बोलती है कि गाँव की औरतें बुज़दिल होती हैं, हमेशा मर्द पर निर्भर रहती है। अपनी

खुद्दारी को पहचानती नही है। इन बातों से माता जी की चेतना का पता चलता है।

बेचैन जी की आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधो पर' में माँ भी अपनी दयनीय स्थिति के आगे विवश थी। अम्मा ने एक दिन क्रोधित होकर कहा था "सुन सौराज, कान खोल के सुन! तेरो बाप मरि चुको है। वो तेरी सुनन कूँ अब कबऊ लौटिके नॉय आवैगो समझे। मैं तेरी कोई जिद पूरी नाँय कर पाऊँगी। अब तोइ अपनी जिन्दगी अपनी कमाई में गुजारनी है। जिद्द छोड़, कछु  काम सीख ले। कछु नाँय तो साइकिल में पिंचर जोड़नों ही सीख ले।"[36]

उपर्युक्त पंक्तियाँ बेचैन जी की आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' की हैं जिसमें कवि ने नारी चेतना को दर्शाया है जिसमें एक माँ अपने पुत्र को समझा रही है और उसको आत्मनिर्भर बनाने की बातें कह रही हैं क्योंकि उसके सर से पिता का हाथ हट गया है तो खुद ही तुम्हें अपने हाथों से आगे बढ़ना है।

अम्मा चीख-चीख कर कह रही थी-- “जो कारे पेट को आदमी है, जा को बेटा फेल है गओ तो मेरो सौराज न पढ़ जाय, जा मारें दारीजार ने किताबें जराई दई। पर मैं मन मसोसि कें कह रही हूँ, बंदे याद रखिये, जो सौराज जरूर पढैगो। भगवान के घर देर है अंधेर नाँय है, और तू कितनोऊँ जल मरि, तेरे चाहिवे तें रूपा नाँय पढ़ि पावेगो।"[37]

प्रस्तुत पंक्तियाँ बेचैन जी की आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' की हैं जिसमें कवि ने नारी चेतना को दर्शाया है जिसमें एक माँ अपने पुत्र के भविष्य के लिए अपने पति का विरोध करती है तथा अपने बच्चे की पढ़ाई पर पति द्वारा रोक लगाने पर उससे कहती है कि क्यों नहीं पढ़ेगा मेरा बेटा, तेरा बेटा फैल हुआ है? तो मेरा सौराज क्यों नहीं पढेगा।

यहां माँ सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों के कारण चाहते हुए भी बालक श्यौराज को नहीं पढ़ा सकती। वह उसे हरदम अपने कठिन हालातों के प्रति सचेत कराते हुए नजर आती है। सहानुभूति भरे शब्दों में बेटे से कहती है कि"जो तू पढ़नो चाहत है तो पहले अपने मर गये बाप को वापस - बुला। बाप नाँय लावत तो पहले अपने खान कूँ रोटी पहन्न कूँ लत्ता और फीस

किताबन कूँ पैसा ला। तब तू स्कूल जइये और तब तू झण्डा गीत गाइये। का तू जानत नाँय है कै तू भिकरिया को सगो बेटा नाँय है। जो तोय चों पढ़ावेगो? संग हम सब को मारि-तू पढ़िवे की जिद्द नाँय छोड़ेगो तो जे तेरे संग- मारि के घर तें बाहर निकार देगो ।"[38]

प्रस्तुत पंक्तियाँ बेचैन जी की आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' की हैं जिसमें कवि ने नारी चेतना को दर्शाया है जिसमें एक माँ अपने पुत्र के भविष्य के लिए अपने पति का विरोध करती है तथा अपने बच्चे की पढ़ाई पर पति द्वारा रोक लगाने पर कहती है कि क्यों नहीं पढ़ेगा मेरा बेटा, तेरा बेटा फैल हुआ है तो मेरा सौराज क्यों नहीं पढेगा और साथ ही माँ अपने पुत्र से कहती हैं कि अगर तू पढ़ने की ज़िद नहीं छोड़ेगा तो तू भिखारी का बेटा नहीं है जो वह तुझे पढ़ाएगा तेरे साथ ही वह हम सभी को घर से बाहर निकाल देगा।

" वे सब झुंड बना कर मिस्कुट करतीं ये अगर इज्जत पै हाथ डारें तो हम सब रात कूं इकट्ठी हो कैं गड़सा - हँसिया ते एक-एक के नन्हे-नन्हे, टुकड़ा करि चलंगी। जेल होइ या उमर कैद।"[39]

लेखक ने यहां पर नारी के जुझारू रूप को व्यक्त किया है जिसमें नारी के आत्मविश्वास का दृश्य हमें देखने को मिलता है जिसमें नारी पात्र एकता बनाकर लड़ने के लिए बोल रहीं हैं तथा जो उनकी इज़्जत पर हाथ डालेगा उनके टुकड़े टुकड़े कर देने का साहस यहां दर्शाया गया है।

"मैं सीधा चारपाई पर पड़ गया था। ताई ने ऐसी स्थिति में मेरी माँ से कहा था- मुखी तू ही सँभार अपने बेटा कूँ। मैंने तो हाथ बटावन कूँ गोद लओ पर जो तो उलटो मोते सेवा कराबैगो। नाँय भैना, मोइ नाँय चँइयतु काऊ को बेटा।"[40]

उपर्युक्त पंक्तियां में लेखक ने ताई के द्वारा नारी चेतना को व्यक्त किया है जिसमें एक ताई अपने देवर के बेटे को ताना देते हुए कह रही हैं कि मैं तो इससे काम करवाने के लिए गोद लिया था पर यह तो मुझसे ही अपनी सेवा करवा रहा है। यहां हमें उसकी चेतना का हमें पता लग जाता है।

मैंने अपने आने और दहगवाँ कॉलेज से टी. सी. लाने का कारण बताया तो वे उछल पड़े। मौसी की ओर मुखातिब होकर बोले-" देख एक जो बालकु हैं। दस-दस फेरा स्कूल में छोड़ के आओ हूँ। पढ़िलेउ बेटा, पढ़िलेउ बेटा, कहत-

कहत मेरो मगज पच्ची है जातु है, तबऊ एकु दर्जा पास नाँइ करि पाये। जानें मास्टर इन्हें काटि कें खावें है का?"[41]

यहां पर श्यौराज सिंह बेचैन ने जब मौसी के घर अपनी पढ़ाई से संबंधित कार्य के लिए जाता है तो बेचैन जी की मुश्किलों को देखकर मौसी अपने बेटों को फटकारती है और उनसे प्रेरित होने की बात करती है जिसमें नारी चेतना का परिचय दिखाई देता है।

"सुंदरिया ने एक दिन कहा, तुम चिंता छोड़ो, अपनो सामान मेरे घर में धरि जाओ। मैं सँभाल के रख लूंगी। अगली साल तुम्हारी बुआ अपने घर में रैन दें या नाँय रैन दें और हरदिला के घरऊ नाँइ रेउ तो तुम्हें बासन, लत्ता और किताबें सब मिलाई कें कुल एक बोरी- भर सामान है। याद रखियो  तुम्हें जब चाहो मेरे घर में आधी रात जगह मिलेगी।"[42]

इन पंक्तियों में लेखक ने नारी चेतना को सुंदरिया के माध्यम से व्यक्त किया है जिसमें सुंदरिया का व्यवहारिक स्वभाव प्रतीत होता है जो आधी रात को भी पढ़ने वाले की मदद करने के लिए हमेशा तत्पर रहती है।

गुस्से से बेकाबू होकर बोल रहे थे, तभी बऊ को गुस्सा आया। वह एक लड़के का हाथ झटक कर बोली "तू खाई तो खा।  नाँइ तो अपने घर जा। ज्यादा पण्डिताई दिखानी होइ तो अपने घर दिखइये सौराज मेरो बेटा जैसो है। मैं नाँइ मानती तुम्हारी छूतछात।"[43]

प्रस्तुत पंक्तियों में बेचैन जी ने बऊ अनोखिया की चेतना को प्रदर्शित किया है बऊ ऐसी नारी है जो समाज में किसी भी तरह के भेद भाव को नहीं मानती तथा समाज के उच्च जाति के लोगों को संबोधित करते हुए खरी खोटी सुनाती है। ताकि समाज की ऊँच- नीच की विचारधारा से मुक्त हो जाएं। ऐसी चेतना पूर्ण महिलाओं का आदर होना चाहिए।

**निष्कर्ष :--**

नारी सम्पूर्णता का दूसरा पहलू मानी गई है। वह न केवल पुरुष को पूर्णता प्रदान करती है बल्कि दुनिया का आधा प्रतिनिधित्व भी उसके हाथों में है। अनादिकाल से नारी हमेशा पूजनीय रही है। इसीलिए पुरुष को यदि शिव का प्रतिरूप माना गया है तो नारी को शक्ति का इस सृष्टि की सुन्दरतम कृति केवल नारी ही है। इसलिए उसको सृष्टि की साधना और प्रकृति का मूर्त रूप की संज्ञा दी गई है, परंतु सामाजिक परिस्थितियों के चलते वैदिक काल के पश्चात नारी को निम्न दृष्टि से देखा जाने लगा और रीतिकाल आतेआते- नारी केवल एक उपभोग की वस्तु बनकर रह गई। नारी का जितना शोषण पिछले ७०- ७५ वर्षों में हुआ है, वह नारी के प्रति विकृत मानसिकता का ही पर्याय माना गया है फिर भी नारी की उत्पत्ति ही पुरुष के अस्तित्व की एक महत्त्वपूर्ण पहचान है। नारी ही एक चेतनाप्रद शक्ति है जो सृष्टि संरचना में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। तथा इसी आधार पर हमने बेचैन जी की रचनाओं में नारी चेतना को उद्धृत  उनके नारी के विचारों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन ने अपने साहित्य में नारी चेतना के द्वारा समाज में समरसता लाने का प्रयास किया है। समाज में उन्नती के रथ का एक धूरी महिला है जो दायित्वों के द्वारा समाज को बदलने की दिशा में बढ़ती जा रही है। प्रो. बेचैन के साहित्य में जिन नारी पात्रों का चित्रण किया गया है उनका आत्मविश्वास गजब का है। वे मुश्किलो में टूटती नहीं है बल्कि समस्याओं में एक शूरवीर की तरह अपनी उपयोगिता को सिद्ध करती है। यह आने वाले समय की मांग है और परंपरा से चली आ रही नारी विरोधाभासी परंपराओं को तोड़ने का प्रयास किया है। वे जुल्म नहीं सहती है बल्कि कठोरता के साथ उसका जवाब भी देती है। फूलन की बारहमासी ऐसी ही क्रांतिकारी महिला कि यशोगाथा से उनकी लेखनी की धार तेज होती है।

## -: संदर्भ सूची :-


1. www.scotbuzz. org, by bandey अक्टूबर०२/२०२०
2. www.scotbuzz. org, by bandey अक्टूबर०२/२०२०
3. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, पृ. २७४
4. रामपाल सिंह वर्मा, मनोविज्ञान के सम्प्रदाय, पृ. ३
5. वृहद् - संहिता, पृ. ७४
6. डॉ. रेखा कुलकर्णी, हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी, पृष्ठ संख्या - ८४
7. वही, पृ. ७०
8. आशारानी व्होरा, भारतीय नारी : दशा और दिशा, पृष्ठ संख्या - ११
9. डॉ. सौ मंगल कप्पीकेरे, साठोत्तरी हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में नारी (उपलब्धि : विशेषांक ७ पृ-३३ से उद्धरत), पृष्ठ संख्या - १०३
10. डॉ. सौ मंगल कप्पीकेरे, साठोत्तरी हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में नारी (उपलब्धि : नारीवादी या नारीमुक्ति की अवधारणा- डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे पृ.- ५४ से उद्धरत), पृष्ठ संख्या - ५४-५५

11. शीला रजवार, स्वतंत्रोत्तर हिंदी कथा-सहित्य में नारी के बदलते संदर्भ, पृष्ठ संख्या - ७२
12. आशारानी व्होरा, भारतीय नारी : दशा और दिशा, पृष्ठ संख्या - १८
13. प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री, पृष्ठ संख्या - ७९
14. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, कहानी संग्रह - हाथ तो उग ही आते है, पृष्ठ संख्या९४-९३-
15. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, कहानी संग्रह - भरोसे की बहन, पृष्ठ संख्या१३८-
16. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, कहानी संग्रह - भरोसे की बहन, पृष्ठ संख्या१४६-
17. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, कहानी संग्रह- भरोसे की बहन, हंस (कथा मासिक पत्रिका), जुलाई 2016, पृष्ठ संख्या-२०
18. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, कहानी संग्रह - भरोसे की बहन, पृष्ठ संख्या१३९-
19. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, भरोसे की बहन, पृष्ठ संख्या--६०
20. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, भरोसे की बहन, पृष्ठ संख्या --८२
21. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, मेरी प्रिय कहानियां, पृष्ठ संख्या-९१
22. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, हाथ तो उग ही आते हैं, पृष्ठ संख्या-४३
23.बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, नई फसल,पृष्ठ संख्या९९-
24. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, नई फसल,पृष्ठ संख्या६४-
25. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, क्रौंच हूं मैं,पृष्ठ संख्या४८-

26. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, हिंदी दलित साहित्य का इतिहास: शोध और सृजन,पृष्ठ संख्या-२६९

27. बेचैन, डॉ. श्यौराज सिंह, क्रौंच हूं मैं,पृष्ठ संख्या-२५

28.. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, क्रौंच हूं मैं (काव्य संग्रह), पृष्ट संख्या -४८४९-

29. बेचैन, डॉ. श्यौराज सिंह, क्रौंच हूं मैं (काव्य संग्रह), पृष्ट संख्या-२५

30. बेचैन, डॉ. श्यौराज सिंह, क्रौंच हूं मैं (काव्य संग्रह), पृष्ट संख्या -३३

31. बेचैन, डॉ. श्यौराज सिंह, क्रौंच हूं मैं (काव्य संग्रह), पृष्ट संख्या -२४

32. बेचैन, डॉ. श्यौराज सिंह, नई फसल कुछ अन्य कविताएं (काव्य संग्रह),पृष्ट संख्या -५९६०-

33. बेचैन, डॉ. श्यौराज सिंह, नई फसल कुछ अन्य कविताएं (काव्य संग्रह), पृष्ट संख्या -६४

34. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, क्रौंच हूं मैं (काव्य संग्रह), पृष्ट संख्या -३०३१-

35. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, मेरा बचपन मेरे कंधो पर, पृष्ठ संख्या२३४-

36. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, मेरा बचपन मेरे कंधो पर,पृष्ट संख्या -४०४१-

37. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, मेरा बचपन मेरे कंधो पर,पृष्ट संख्या -५६

38. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, मेरा बचपन मेरे कंधो पर,पृष्ट संख्या -६४

39. वही, पृष्ठ संख्या--१४३

40. वही, पृष्ठ संख्या -- २६३

41. वही, पृष्ठ सांख्य--३०९

42. वही, पृष्ठ संख्या--३८६

43. बेचैन , डॉ. श्यौराज सिंह, मेरा बचपन मेरे कंधो पर,
पृष्ठ संख्या-- ३५४

*****